Shodh Sangam Patrika
ISSN: 3049-0707 Volume 2 | Issue 1 | (Jan – Mar 2025)

षोडश संस्कार की वैज्ञानिकता एवं ज्योतिषशास्त्रीय महत्त्व: गर्भाधान संस्कार

चमन लाल
शोधार्थी, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, जयपुर, राजस्थान

सारांश

हमारे ऋषिमुनियों द्वारा स्थापित षोड्श संस्कार में गर्भाधान संस्कार पहले स्थान पर आता है। गर्भाधान संस्कार के द्वारा किसी भी जातक का भविष्य तय होता है। ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र में गर्भाधान करने की मुहूर्त एवं विधि बतायी गई हैं। किस समय गर्भाधान संस्कार करने से गर्भधारण होगा? किस मुहूर्त में गर्भाधान करने से पुरुष जातक उत्पन्न होंगे किस मुहूर्त में स्त्री जातक उत्पन्न होगी? यदि गर्भधारण न हो रही हो तो कौन से उपाय करने चाहिए। अधुना लोग गर्भाधान तो करते परन्तु गर्भधान संबंधी संस्कार नहीं करते। इस लेख के द्वारा गर्भाधान की वैज्ञानिकता एवं ज्योतिषशास्त्रीय महत्त्व के बारे में बताया गया है।

1. परिचय

गर्भाधान संस्कार हिंदू धर्म के सोलह संस्कारों (संस्कारों) में से एक महत्वपूर्ण संस्कार है। यह वैदिक परंपरा का हिस्सा है और व्यक्ति के जीवन के हर चरण को शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए किए जाने वाले संस्कारों में से पहला है। गर्भाधान संस्कार का उद्देश्य सृष्टि की उत्तम संतति प्राप्त करना और परिवार को शुभ और गुणवान संतान प्रदान करना है। आज के समय में, इस संस्कार को प्रतीकात्मक रूप में देखा जाता है। यह ध्यान देने योग्य है कि इसका मूल उद्देश्य केवल धार्मिक क्रियाकलाप नहीं है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक तैयारी के माध्यम से स्वस्थ और गुणी संतान की प्राप्ति को सुनिश्चित करना है। गर्भाधान संस्कार न केवल धार्मिक प्रक्रिया है बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य भी है, जो मानव जीवन में परिवार और समाज की नींव को मजबूत करता है। शरीर का आरम्भ गर्भाधान और शरीर का अन्त भस्म कर देने तक सोलह प्रकार के उत्तम संस्कार करने होते हैं । उनमें से प्रथम गर्भाधान-संस्कार है ।

2. समीक्षा

डॉ अशोक कुमार (2019). वर्तमान में प्रत्येक स्त्री-पुरूष कलह से भरे हुए हैं, क्रोध से, ईष्या से, एक-दूसरे के प्रति संघर्ष से, अहंकार से, एक दूसरे से मुँह फेर कर बैठे हैं, एक-दूसरे के मालिक बनना चाह रहे हैं। इसी बीच उनके बच्चे पैदा हो रहे हैं। ये बच्चे कैसे सुयोग्य होंगे, ये आध्यात्मिक जीवन में कैसे प्रवेश पाएंगे ? इसलिए गर्भधान संस्कार की मनोवैज्ञानिकता को समझना आवश्यक है।

वंदना दुबे (2018). प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में मनुष्य जीवन में जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों की व्याख्या की गई है। इनमें गर्भ संस्कार भी एक प्रमुख संस्कार माना गया है। अतः गर्भसंस्कार द्वारा आध्यात्मिक ग्रंथ एवं चिकित्सा विज्ञान के अनुसार निश्चित रूप से एक स्वस्थ चरित्रवान संतति का प्रादुर्भाव किया जा सकता है।

3. उद्देश्य

इस लेख के निम्नलिखित उद्देश्य है:

- गर्भधान संस्कार के वैज्ञानिक महत्व का अध्यन करना
- गर्भधान संस्कार के ज्योतिषशास्त्रीय महत्व का अध्ययन करना

4. विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। विषय वस्तु विश्लेषण विधि को दस्तावेज विश्लेषण भी कहा जाता है। इसमें शोधकर्ता अध्ययन किये जाने वाले व्यक्तियों के व्यवहारों का सीधे प्रेक्षण या निरीक्षण नहीं करता है और ना ही वह उन व्यक्तियों का साक्षात्कार लेता है या उनके विचारों को किसी प्रश्नावली के माध्यम से जानने की कोशिश करता है बल्कि ऐसे व्यक्तियों द्वारा किये गये संचारों या उनके व्यवहारों के बारे में एकत्रित किये गये दस्तावेजों का विश्लेषण करता है ओर निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश करता है।

5. परिणाम

5.1 गर्भाधान संस्कार का वैज्ञानिक महत्व

आदिम युग में सहवास एवं प्रसव भले ही एक स्वाभाविक कर्म रहा हो, लेकिन वैदिक काल से विकसित होते हुए गृह्यसूत्रकाल तक गर्भाधान एक सुव्यवस्थित संस्कार के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका था। गृह्यसूत्रों के अनुसार पति मनोवांछित पुत्र- पुत्री प्राप्ति के लिए व्रत धारण करता था, व्रत की समाप्ति पर अग्नि में पक्वान्न की आहुति दी जाति थी और तब वैदिक ऋचाओं का गान करता हुआ पति अपनी सुसज्जित पत्नी में गर्भाधान करता था।

धर्मसूत्रों और स्मृति ग्रन्थों में गर्भाधान संस्कार का और भी विस्तृत निर्देश उपलब्ध होता है। इन ग्रन्थों में गर्भाधान के समय की उपयुक्तता और विधि पर सूक्ष्मतापूर्वक विचार किया जाता है। मनुस्मृतिकार पत्नी के ऋतु- काल की प्रथम चार रात्रि, ग्यारहवीं तथा तेरहवीं रात्रि का निषेध कर शेष दस रात्रियों को इस संस्कार के लिए प्रशस्त बतलाता है।

तासामाद्यश्चतस्रस्तु निन्दितेकादशी च या।
त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ताः दश रात्रयः।। मनु-3.47

इसके अतिरिक्त अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा एवं सम्पूर्ण पर्व की रात्रियाँ भी इस कार्य के लिये निषिध्द मानी गई हैं -

अमावस्यामष्टमीं च पौर्णमासीं चतुर्दशीम्।
ब्रह्मचारी भवेन्नित्यामप्यृतौ स्नातको व्दिजः।। मनु- 4.128
पर्ववर्जं व्रजेच्चैनां तद्व्रतो रतिकाम्यया। मनु-3.45

महर्षि याज्ञवल्क्य शास्त्रविहित रात्रियों में भी मघा और मूल नक्षत्र के समय गर्भाधान का निषेध करते है-

मघां मूलं च वर्जयेत्।

भारतिय मनीषा मनोवांछित संतान - प्राप्ति हेतु यह परामर्श देती है कि पुत्रकामी को छठी, आठवीं, दसवीं, बारहवीं, आदि युग्म रात्रियों में गर्भाधान संस्कार सम्पन्न करना चाहिए और पुत्री चाहनेवालों को पाँचवीं, सातवीं, आदि अयुग्म रात्रियों में-

युग्मासु पुत्रा जायन्तेऽस्त्रियोयुग्मासु रात्रिषु।

वस्तुतः भारतीय शास्त्रों ने गर्भाधान कर्म को एक पवित्र संस्कार का स्वरूप प्रदान किया है।शास्त्रकारों की स्पष्ट मान्यता है कि सहवास काल में पति- पत्नी के विचार - व्यवहार भावी सन्तति के संस्कार को पूर्ण रूपेण प्रभावितकरते हैं। केवल इन्द्रिय- सुख के उद्देश्य से सम्पन्न समागम के फलस्वरूप जो आकस्मिक गर्भाधान होता है, उससे धार्मिक, सदाचारी और यशस्वी सन्तान- प्राप्ति की आशा नहीं की जा सकती। अतः सर्वगुणसम्पन्न संन्तान के लिए गर्भाधान संस्कार में पति-पत्नी के तन-मन की पवित्रता के साथ-साथ मांगलिक परिवेश और ईश्वराराधन का विशेष अनुरोध दिखलाई पड़ता है।

गर्भाधान के लिये सायंकाल निषिध्द समय माना गया है। एकबार दक्षपुत्री दिति ने कामसंतप्त होकर सायंकाल के समय ही अपने पति महर्षि कश्यप से पुत्र- प्राप्ति हेतु समागम की प्रार्थना की। महर्षि कश्यप ने इस कार्य के लिए सायंकाल को अनुचित अवसर बतलाते हुए दिति से कुछ समय तक प्रतीक्षा करने का परामर्श दिया। लेकिन कामविह्वलतावश उचित- अनुचित का विवेक न करती हुई दिति ने हठपूर्वक पति के साथ समागम किया। बाद में दिति इस निन्दित कर्म से स्वयं भी लज्जित होकर अपनी भावी संतान की चिन्ता करने लगी। किन्तु गर्भाधान - काल के दोषों का निराकरण अब संभव नहीं था। महर्षि कश्यप ने दिति से कहा कि तुम्हारा चित्त कामवासना से मलिन था और वह समय भी प्रशस्त नहीं था। तुमने मेरी बात नहीं मानी और इसलिये तुम्हारे गर्भ से दो बड़े अमंगलमय और अधम पुत्र उत्पन्न होंगे, जो सम्पूर्ण लोक और लोकपालों को अपने अत्याचारों से रूलायेंगे-

अप्रायत्यादात्मनस्ते दोषान्मौहूर्तिकादुत।
मन्निदेशातिचारेण देवानां चातिहेलनात्।।
भविष्यतस्तवाभद्रावभद्रे जठराधमौ।।
लोकान् सपालांस्त्रींश्चण्डि मुहुराक्रन्दयिष्यतः।।
भागवत पुराण-3.14.37,38

इस प्रकार मुहूर्त का अतिक्रमण करके कामविह्वल होकर पुत्रोत्पत्ति में प्रवृत्त होने वाली दिति ने हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु जैसे दो दैत्य पुत्रों को जन्म दिया।

महाभारत की कथा भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। माता सत्यवती के आग्रह से महर्षि व्यास ने कुरूवंश में सन्तान-परम्परा की रक्षा के लिए अम्बिका के साथ समागम किया।किन्तु गर्भाधान- काल में महर्षि व्यास के काले रंग, जटाओं और दाढ़ी-मूँछ को देखकर अम्बिका ने भय के मारे अपनी आँखे बंद कर ली और माता के इस दोष से अन्धे बालक ध्रृतराष्ट्र का जन्म हुआ। इसी प्रकार महर्षि व्यास को देखकर अम्बालिका गर्भाधानकाल मे पाण्डुवर्ण की हो गई थी, इसलिये उसने पाण्डुवर्ण के पुत्र पाण्डु को जन्म दिया। किन्तु, अम्बिका व्दारा अपने स्थान पर भेजी गई दासी ने महर्षि व्यास का बड़े उत्साह से सत्कार और पूजन किया। गर्भाधान- काल में पूर्ण स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होने के कारण उसने धर्मात्मा और बुध्दिमान् पुत्र विदुर को जन्म दिया। इसप्रकार गर्भाधान-काल में तीनों स्त्रियों की मनोदशाओं की भिन्नता के कारण तदनुरूप पुत्र उत्पन्न हुए। (महाभारत, आदिपर्व- सम्भवपर्व)

भागवत पुराण और महाभारत के ये दोनों आख्यान शास्त्रनिर्दिष्ट गर्भाधान संस्कार के वैज्ञानिक महत्व को प्रमाणित करते हैं। पति-पत्नी के गुण, संस्कार, आचरण, और अन्तःकरण की वृत्तियाँ भावी संतति के संस्कार निर्मित करती हंै। विशेषकर गर्भाधान-काल मंे दम्पती के संयुक्त कायिक-मानसिक विचारों के अनुरूप गर्भ का संस्कार होता है और वैसे ही पुत्र की प्राप्ति होती है। बल्कि सम्पूर्ण गर्भिणी माता के परिवेश, चिन्तन, विचार और आचरण से गर्भस्थ शिशु का स्थाई चरित्र निर्धारित होता है। दैत्यराज हिरण्यकशिपु की गर्भवती पत्नी को नारद ने भक्ति का उपदेश दिया था और गर्भस्थ प्रह्लाद उस उपदेश श्रवण के फलस्वरूप जन्मतः ऐसे कट्टर हरिभक्त हुए, जिसे मृत्युभय भी विचलित नहीं

कर सकता था। आधुनिक विज्ञान भी इस शास्त्रीय मत से सर्वथा सहमत है। अतः दैवी गुणसंपन्न, धार्मिक, यशस्वी संतान के लिये शास्त्रोक्त गर्भाधान संस्कार सर्वथा एक तथ्यपूर्ण और विज्ञानसम्मत अनुष्ठान है। सचमुच कर्दम समान महात्मा पति और देवहूति जैसी पतिपरायण शुध्दचित्तवाली पत्नी के मिलन से ही साक्षात् भगवान् विष्णु (कपिल) का जन्म होता है।

5.2 गर्भाधान संस्कार का ज्योतिशास्त्रीय महत्व

- **शुभ मुहूर्त का चयन:**
  - गर्भाधान संस्कार के लिए उचित समय (मुहूर्त) का चयन किया जाता है। इसमें चंद्रमा की स्थिति, तिथि, नक्षत्र, योग, और करण का ध्यान रखा जाता है।
  - अमावस्या, चतुर्दशी, अष्टमी, और ग्रहण के समय गर्भाधान संस्कार करना अशुभ माना जाता है।
  - पुष्य, हस्त, मृगशिरा, अनुराधा, और रोहिणी नक्षत्र में इसे शुभ माना जाता है।
- **ग्रहों की स्थिति:**
  - गर्भाधान के समय पति और पत्नी की कुंडली में ग्रहों की स्थिति का अध्ययन किया जाता है।
  - शुक्र, चंद्र और बृहस्पति की अनुकूलता से श्रेष्ठ संतान प्राप्ति की संभावना बढ़ती है।
  - अगर किसी दोष (जैसे मंगल दोष) की संभावना हो, तो उसे पहले शांत कराया जाता है।
- **शारीरिक और मानसिक शुद्धि:**
  - गर्भाधान संस्कार से पहले पति-पत्नी के मानसिक और शारीरिक शुद्धि का विशेष ध्यान रखा जाता है।
  - उचित आहार, ध्यान, और शास्त्रीय मंत्रोच्चारण से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण किया जाता है।
- **संतान की प्रकृति पर प्रभाव:**
  - ज्योतिष में यह माना जाता है कि गर्भाधान के समय ग्रहों की स्थिति और मुहूर्त संतान की शारीरिक और मानसिक गुणों पर गहरा प्रभाव डालते हैं।
  - अनुकूल ग्रह स्थिति से संतान में धार्मिकता, बुद्धिमत्ता, और स्वास्थ्य जैसे गुण उत्पन्न होते हैं।
- **दोष निवारण:**
  - अगर पति-पत्नी की कुंडली में किसी प्रकार का दोष (जैसे पितृ दोष या कालसर्प दोष) हो, तो गर्भाधान से पहले विशेष पूजा और उपाय किए जाते हैं।

वैदिक दृष्टिकोण:

गर्भाधान संस्कार के दौरान वेदों के मंत्रों का उच्चारण किया जाता है, जिनका उद्देश्य सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करना और नवजीवन के लिए शुभ वातावरण तैयार करना होता है। यह संस्कार न केवल ज्योतिषीय दृष्टि से बल्कि आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6. निष्कर्ष:

आज के समय में अधिकतर लोग संतान संबंधी समस्या से परेशान है, ऐसी स्थिति में हमारे मनीषियों के द्वारा गर्भाधान के लिये बताये गये विधि से संस्कार करके गर्भाधारण करने से इस समस्या का समाधान हो सकता है। मनीषियों द्वारा निर्धारित मुहूर्त में गर्भधारण करने से मनोनुकूल संतान की प्राप्ति की जा सकती है। ज्योतिषीय दृष्टि से गर्भाधान संस्कार

का महत्व यह सुनिश्चित करना है कि संतान की उत्पत्ति शुभ समय और सकारात्मक ग्रह स्थिति में हो। यह संस्कार स्वस्थ, विद्वान, और संस्कारी संतान प्राप्ति का आधार माना जाता है।

7. सन्दर्भ सूची

1. मनुष्य गिरा हुआ देवता या उठा हुआ पशु: श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा, पृष्ठ 2।
2. व्यास स्मृति, 12.15-16
3. पवित्र कुमार शर्मा: संस्कार अनुशीलन, हंसा प्रकाशन, जयपुर, पृ. 11
4. षोड्श संस्कार पद्वति-मानव जीवन में संस्कारों का महत्व, पृ. 16-17
5. वैदिकै कर्मभिः.....पेरत्य चेह च, मनुस्मृति 2.26
6. गार्भे र्होमैर्जाति.....द्विजन्मनामपमृज्यते, मनुस्मृति 2.27
7. वायुनन्दन पाण्डेय: भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता-संस्कारों की वैज्ञानिक उपयोगिता, पृ. 37-39
8. श्रीराम शर्मा आचार्य: षोड्श संस्कार विवेचन, युग निर्माण प्रेस, मथुरा, पृ. 1.26
9. श्रीराम शर्मा आचार्य: कर्मकाण्ड भास्कर-पुंसवन संस्कार, युग निर्माण प्रेस, मथुरा, पृ. 137-138
10. श्रीराम शर्मा आचार्य: षोड्श संस्कार विवेचन, युग निर्माण प्रेस, मथुरा, पृ. 234
11. श्रीराम शर्मा आचार्य: कर्मकाण्ड भास्कर-नामकरण संस्कार, युग निर्माण प्रेस, मथुरा, पृ. 144
12. छंदोग्य उपनिषद, 6.4.12
13. श्रीराम शर्मा आचार्य: षोड्श संस्कार विवेचन, पृ. 3.43
14. श्रीराम शर्मा आचार्य: कर्मकाण्ड भास्कर-विद्यारम्भ संस्कार, युग निर्माण प्रेस, मथुरा, पृ. 174
15. प्रकाश चन्द्र गंगराडे: हिन्दुओं के रीति-रिवाज तथा मान्यताएँ, कर्णवेध संस्कार संस्कार क्यों?, हिन्दूलाॅजी बुक्स, नई दिल्ली, पृ. 45
16. ब्रतेन ब्रहम्चर्येण.....क्रियते ये सः, मनुस्मृति 2.13
17. श्रीराम शर्मा आचार्य: षोड्श संस्कार विवेचन, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृ. 2.33
18. श्रीराम शर्मा आचार्य: संस्कारों की पुण्य परम्परा, युग निर्माण प्रेस, मथुरा, पृ. 21-22
19. यू.आर.अनन्तमुर्ति: संस्कार, ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई छिल्ली, पृ. 111-112
20. डा. फणीन्द्र कुमार मिश्र: भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता-अन्त्येष्टि कर्म एक वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 197-198
21. वंदना दुबे (2018). योग एवं गर्भ संस्कार: स्वस्थ एवं संस्कारित संतति, IJSRST, (4) 5: 1976-1979.
22. डॉ अशोक कुमार (2019). गर्भधान संस्कार की मनोवैज्ञानिकता, International Journal of Advanced Academic Studies; 1(1): 95-101